सफल जीवन के लिए दृढ़ विचार

मनुष्य के विचारों का उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विचार मनुष्य के कर्म एवं भविष्य का लक्ष्य निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। सुंदर स्वच्छ विचार वाले मानव अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करते हैं। उनके संसार को देखने और समझने का मापदंड भी आशापूर्ण होता है।

कहा जाता है - 'जाकि रहि भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखहिं तिन तैसी'

मनुष्य के विचार उसके व्यक्तित्व का दर्पण होते हैं। जैसा विचार वह मन में रखेगा, तो आपको हर व्यक्ति दुष्ट ही नज़र आयेगा। और अगर सत्य विचार होंगे, तो आपको दूसरों के अच्छे गुण नज़र आयेंगे।

विचारों का प्रभाव

विचारों का मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्व है। सोचने समझने और विचारने के गुण के कारण ही मनुष्य को समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है। मनुष्य जो विचार करता है, उसे कार्य रूप में परिणत करने की क्षमता भी रखता है। परंतु उसकी सफलता उसकी विचारों की दृढ़ता, महापुरुष हुए हैं, उनके विचारों में दृढ़ता थी, इरादों में बुलंदी थी, इसलिए आज दुनिया न केवल उन्हें मानती है, बल्कि उनकी पूजा करती है।

सफलता के लिए मन, वचन और कर्म तीनों शक्तियाँ साथ

जब किसी चीज़ को पाने का विचार मन में करके आत्मविश्वास के साथ कर्म करें तो मन, वचन और कर्म तीनों शक्तियाँ एक साथ हो सफलता

जन्म से तो कोई उन्नति का ताज पहनकर आता नहीं है। संघर्ष तथा प्रयासों से ही समस्त उपलब्धियां मिलती हैं। आप सदैव अपना आदर्श उचित व सफल ही चुनें। आपका आदर्श जैसा होगा, आपकी शक्ल और प्रयास वैसे ही हो जायेंगे।

वैसे ही भाव उसके चेहरे पर उभर आते हैं। अशुभ विचार वाले मनुष्य रोगी एवं दुष्कर्म करने वाले भोगी बनते हैं। जबकि शुभ विचार वाले स्वस्थ और सत्कर्म वाले योगी बनते हैं। जिनका मन उत्साहपूर्ण स्फूर्ति दायक, आनंददायक विचारों से परिपूर्ण रहता है, वे सदा युवा रहकर दीर्घायु को प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के विचार जैसे होंगे वैसे ही रूप में वह भगवान के अस्तित्व को देखेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर आपके हृदय में दुष्ट विचार होंगे योजना एवं आत्मशक्ति पर निर्भर करती है। जो व्यक्ति विचार कर, योजना बनाकर, दृढ़ता से विश्वास के साथ लक्ष्य प्राप्ति के अग्रसर होते हैं, वे मंज़िल पर पहुंचकर ही दम लेते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो सोचते तो बहुत कुछ हैं लेकिन कर कुछ नहीं पाते। ऐसा इसलिए होता है कि उनके विचारों में दृढ़ता नहीं होती। यहाँ यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि यदि विचारों में दृढ़ता नहीं होगी, तो कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। बड़े बड़े जो के चरम सीमा तक पहुँच जाती हैं और वह वस्तु आपको मिलकर ही रहती है। किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि आप पहले उसकी प्राप्ति का विचार अपने मन में लायें। उसके बाद उसे पाने का नियम बनायें और उसी दिशा में प्रयास करें, तभी आप उस लक्ष्य को पा सकते हैं।

विचारों को आशामय और शुभ सूचक बनायें

किसी भी कार्य को करने के लिए आवश्यक है कि अपने विचारों को सदैव आशामय तथा शुभ सूचक बनाया जाये। अशुभ विचार की तो कल्पना भी मत कीजिये। विचारों में उत्साह आपकी कार्यक्षमता को तिगुना कर देती है। यदि उत्साह बराबर बना रहा, तो आपके कार्य में निरंतर सुधार आता जायेगा। अपनी कल्पना में सदैव आनंदमय और सौभाग्यशाली चित्र ही देखें। सदैव आशा के विचार मन में रखने से एक लाभ यह होता है कि दुःस्वप्न और निराशायें अपने आप दूर होती चली जाती हैं। और इस प्रकार आपकी उन्नति की राह में आने वाली हर रुकावट दूर हो जाती है।

विचार ही जीवन को सफल बनाते हैं। अतः जीवन में जितने लोगों ने सफलता प्राप्त की है, आप उनके जीवन को परखिये। आपको पता चल जायेगा कि उनका आदर्श क्या था। वे अपने जीवन को कैसे सफल बना सके। उनको सफलता एक दिन में नहीं मिली। इसके लिए वे पहले अपने मन में दृढ़ विचारों को लाये। इसके अनुसार उन्होंने परिश्रम किया, तब कहीं जाकर एक लम्बे संघर्ष के बाद उन्हें सफलता मिल पाई। आप किसी भी स्तर पर उनसे हीन नहीं हैं। आवश्यकता है उनको प्रेरणा बनाने की। जब वे आगे बढ़ सकते हैं, तब आप क्यों नहीं बढ़ सकते! जन्म से तो कोई उन्नति का ताज पहनकर आता नहीं है। संघर्ष तथा प्रयासों से ही समस्त उपलब्धियां मिलती हैं। आप सदैव अपना आदर्श उचित व सफल ही चुनें। आपका आदर्श जैसा होगा, आपकी शक्ल और प्रयास वैसे ही हो जायेंगे। सफल जीवन जीने के लिए सदैव सफल आदर्श, सफल विचार और सफल भावनाओं का चयन करें।

योग के ज़रिये बच्चों को सकारात्मकता दें

संतान के बीजारोपण के समय यदि स्त्री-पुरुष केवल पति-पत्नी हैं तो सारी क्रिया देह से शुरू होकर देह पर ही खत्म हो जाएगी। देह को लेकर पति-पत्नी की अपनी अपेक्षाएं हैं और वह बच्चे में स्वभाव बनकर उतरेंगी। जो बच्चे बहुत अशांत हैं, आवेशित हैं, उनका निर्माण माता-पिता ने देह के स्तर पर ही किया होगा। लेकिन जिन स्त्री-पुरुष ने पति-पत्नी के रूप में बच्चों की उत्पत्ति के समय शरीर से आगे बढ़कर एक-दूसरे की आत्मा को स्पर्श कर लिया हो, उनके बच्चे अवश्य ही शांत, संतुष्ट और प्रसन्न रहेंगे। अधिकांश माता-पिता यहां चूक जाते हैं। ऐसे दंपती जो माता-पिता बन चुके, बच्चे संसार में आकर अपना परिणाम दे रहें होंगे, तब क्या किया जाए? यहां से योग-विज्ञान आरंभ होता है। योग कहता है उस समय एक बार भोग की क्रिया हुई और परिणाम आ गया, लेकिन योग की क्रिया सतत् चल रही है। संतानों में प्रेम, प्रसन्नता और शांति उतारने के अवसर अब भी उतने ही हैं। पहले एक क्रिया थी, अब आएगी तरंग। माता-पिता सावधान हो जाएं और भीतर की नेगेटिविटी को अपने वाइब्रेशन्स में न उतरने दें तो बच्चे वही शांति, प्रसन्नता ग्रहण करेंगे जो माता-पिता दे रहे होंगे। पर अब उन्हें अतिरिक्त तैयारी करनी पड़ेगी। भौतिक रूप से बच्चों को सब दें, पर नैतिक रूप से देने की तैयारी तरंगों के माध्यम से ही हो पाएगी। यही योग विज्ञान है। इसलिए योग से अवश्य जुड़ जाइए...।

मुम्बई-मलाड। ब्रह्माकुमारीज़, ट्रैफिक पुलिस तथा डालमिया कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'रोड सेफ्टी अवेयरनेस' प्रोग्राम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए टीवी एवं फिल्म अभिनेता ऋषिकेश पांडे, डालमिया कॉलेज की वाइस प्रिन्सीपल माधवी मैम, आर.टी.ओ. पुलिस इंस्पेक्टर हितेन्द्र भावसार, ब्र.कु. कुंती तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

गुंडरदेही-छ.ग.। 'नारी सशक्तिकरण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पुष्पा। मंचासीन हैं ब्र.कु. नारायण, भाजपा जिला महामंत्री सुलेखा जी तथा सोशल लीडर पूजा जी।

चुनार-मिरज़ापुर(उ.प्र.)। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर राजदीप महिला पी.जी. कॉलेज,कैलहट में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् महात्मा श्री कृष्ण कांत जी,संस्थापक,ज्ञान दान मिशन,वाराणसी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम।

चारनेट-राज.। गणतंत्र दिवस पर आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चारनेट में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ तथा नेहरू नवयुवक मंडल चारनेट द्वारा कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में एन.एन.एम. के अध्यक्ष ब्र.कु. शैलेष, प्रधानाध्यापक धन्ना लाल गुर्जर, जिला कांग्रेस के आईटी सेल अध्यक्ष लड्डू लाल मीणा, ब्र.कु. राकेश तथा अन्य।

किल्ला पारडी-गुज.। 'स्वस्थ तन, स्वस्थ मन शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नगर पालिका प्रमुख फाल्गुनी बहन, डॉ. कार्तिक भद्र, योगाचार्य ब्र.कु. दुष्यंत, ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. वीनू भाई तथा अन्य।

राजगढ़-ब्यावरा। बसंत पंचमी पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्टेट बैंक मैनेजर राजेश नागर, फुलखेड़ी सोसायटी अध्यक्ष नारायण सिंह परिहार, रिटायर्ड बैंक मैनेजर शिव नारायण नामदेव, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।